International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-01-2022, Accepted: 23-01-2022, Published: 08-02-2022
Volume 8, Issue 1, 2022, Page No. 31-35

लेखकीय संघर्ष और इंसानियत की अभिव्यक्ति–कथाः फिलॉस्फर

धर्मेन्द्र कुमार[1], सुनीता यादव[2]
[1] सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, राम जयपाल महाविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत
[2] सह आचार्य, हिन्दी विभाग, राँची महिला महाविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख में प्रसिद्ध उपन्यासकार विजय सौदाई के उपन्यास 'फिलॉस्फर' की विवेचना भाव–सौन्दर्य की दृष्टि से की गई है। इस उपन्यास की संक्षिप्त कथा के माध्यम से इसके कथ्य पर भी विचार किया गया है। विजय सौदाई मानवीय मूल्यों की स्थापना करने वाले उपन्यासकार रहे हैं। जाति–धर्म से आगे बढ़कर इंसानियत की बात करने वाले रचनाकारों में उनकी गिनती होती है। आलेख में 'फिलॉस्फर' उपन्यास के विविध मानवीय, सामाजिक एवं अन्य पक्षों पर सम्यक दृष्टि डाली गई है। मानव जीवन के विभिन्न भावों एवं परिस्थितियों का सम्यक् विवेचन 'फिलॉस्फर' में देखा जा सकता है। उपन्यास के भाव–सौन्दर्य के माध्यम से एक लेखक के जीवन–संघर्षों की अभिव्यक्ति को व्याख्यायित करने का प्रयास शोध–आलेख में किया गया है।

मूलशब्दः उदीयमान लेखक का संघर्ष, बेरोजगारी की समस्या, प्रेम की असफलता, धार्मिक उन्माद एवं अंधविष्वास, मीडिया का चरित्र, इंसानियत की महत्ता, धारदार व्यंग्य, साहित्य की दुनिया का खोखलापन

प्रस्तावना
'उपन्यास' शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्दों से हुई है–'उप' एवं 'न्यास'। 'उप' अर्थात् 'समीप' तथा 'न्यास' का आशय है–'निकट(मनुष्य के) रखी हुई वस्तु'। हिन्दी साहित्य कोष में उपन्यास के संबंध में कहा गया है–*''वह वस्तु या कृति जिसको पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है, इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है, इसमें हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गयी है।''* [1] हिन्दी के जाने–माने लेखक विजय सौदाई का नवीनतम प्रकाशित उपन्यास 'फिलॉस्फर' को पढ़कर उपर्युक्त वर्णित संदर्भ बिल्कुल सत्य प्रतीत होता है। बहुत कम समय में विजय जी ने हिन्दी साहित्य के प्रबुद्ध समाज और सामान्य पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचने में सफलता अर्जित की है। 30 मार्च,1983 ई. को उत्तर प्रदेश के मुज़फ़्फ़रपुर में जन्मे विजय सौदाई के अब तक कुल चार उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं–'दलित', 'वंदे मातरम्', 'छैला' और 'फिलॉस्फर'। 'फिलॉस्फर' में वर्तमान समय और समाज के जीवन का प्रतिबिम्ब स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। वह भी सरल और स्पष्ट भाषा में। प्रस्तुत उपन्यास लेखकीय संघर्ष और इंसानियत की अभिव्यक्ति की विस्तृत गाथा है। धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक जकड़बंदी से हटकर नवीन दृष्टिकोण की अद्भुत व्याख्या इसकी मूलभूत विशषता है। फिलॉस्फर का मतलब ही है–दुनिया को देखने की नई दृष्टि और विचार प्रदान करने वाला व्यक्ति। लेखक के शब्दों में– *''फिलॉस्फर.....दार्शनिक, दुनिया को नई सोच, नई दिशा, नया ज्ञान देने वाला दुनिया का बाग़ी फिलॉस्फर....''* [2] कई दृष्टियों से, यह उपन्यास हिन्दी उपन्यास–साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

उपन्यास की कथा
फिलॉस्फर की कथा एक संघर्षशील युवा लेखक समर की कहानी है। उपन्यास का नायक समर आरंभ से ही जीवन के तमाम झंझावातों को झेलते हुए अपने मुकाम को हासिल करता है। अख़बार में रिपोर्टर का काम करके वह कुछ उपार्जन करता है। लेकिन इस माध्यम से उसके जीवन की न्यूनतम आवश्यकताएँ भी पूरी नहीं हो पाती हैं। उन्मुक्त विचारों और अख़बार के अनुकूल रिपोर्टिंग न करने के कारण अख़बार की संपादिका मीनाक्षी उसे नौकरी छोड़ने पर विवश कर देती है। मध्यवर्गीय परिवार का समर माता–पिता के साथ–साथ अपनी विवशता समझता है। उसके मन में सामाजिक रूढ़ियों और धार्मिक अंधविश्वासों के प्रति गहरा आक्रोश है। इसकी अभिव्यक्ति उपन्यास के कई स्थलों में सहजता से की गई है। उसका सपना सफल लेखक बनना है। वह अपने सपने को पूरा करने के लिए जी–जान से लगा रहता है। उसके दो उपन्यास भी प्रकाशित हो चुके हैं। लेकिन उन्हें कोई सफलता नहीं मिलती। इस कारण, प्रकाशक भी समर का शोषण करता है। समय के साथ, घरेलू–पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति करने हेतु समर पर माता–पिता एवं बड़े भाई का दबाब बढ़ता जाता है। समर की शादी के लिए घरवाले लगातार दबाव बनाये रहते हैं। वह मालती नाम की लड़की से प्रेम करता है। मालती भी उसे चाहती है। लेकिन, वह कामयाब होने के बाद शादी करना चाहता है। समर कामयाब नहीं हो पाता। एक साल इंतज़ार करने के बाद मालती विवाह कर लेती है। ढंग का रोज़गार अथवा आय का निष्चित स्त्रोत न होने के कारण उसे अच्छे घर का कोई भी व्यक्ति अपनी लड़की देने को तैयार नहीं होता है। समर भी इन जंजालों से मुक्ति पाना चाहता है। समर के घरवाले उसका विवाह एक कुरूप लड़की से करना चाहते हैं। उस लड़की और समर का कोई मेल नहीं है। लड़कीवाले उसके मौन को सहमति मानकर विवाह की रस्में पूरी करने हेतु उतावले हो जाते हैं। वह घर से भाग जाता है। इस कारण उसके पिता को काफ़ी अपमान सहना पड़ता है। समर के घर से भागने के कुछ दिनों बाद पिता और फिर उसकी माँ की भी मृत्यु हो जाती है।

घर से भागने के बाद समर की बदहाली शुरू होती है। बेघर समर भयंकर दुख सहन करता है। सर्दी से काँपते समर की दुर्दशा कई दिनों से भूखे होने के कारण और भी बढ़ जाती है। वह निर्माणाधीन इमारत में मज़दूरी करता है। यहीं उसकी मुलाक़ात शराबी और निर्दयी धीरा से होती है। वह समर को पुलिस से छुड़ाकर अपने घर लाता है। धीरा की दो बेटियों सीता और गीता से समर का भावात्मक लगाव हो जाता है। अपने पति से निरंतर प्रताड़ित होने वाली धीरा की पत्नी लक्ष्मी के मन में समर के प्रति कोमल भाव जाग्रत होते हैं। लक्ष्मी सेवाभाव में माँ और स्नेह–प्रेम में प्रेमिका–पत्नी के समकक्ष है। वह बीमार समर की जी–जान से सेवा करती है। वह समर की उल्टी तक साफ़ करती है। लक्ष्मी–समर के बीच अंतरंग संबंध स्थापित हो जाता है। परस्त्री और वेश्यागामी धीरा अपनी रखैल बंतो को घर में लाना चाहता है। लक्ष्मी जी–जान से विरोध करती है। एक दिन धीरा लक्ष्मी–समर को अंतरंग अवस्था में देख लेता है। वह लक्ष्मी की पिटाई करता है और समर को हमशा के लिए घर से निकाल देता है। लक्ष्मी के वियोग में व्याकुल समर की भेंट लाइब्रेरियन शमां से होती है। शमां समर के लेखकीय कौशल से मुग्ध है। वह अपने घर में उसे पनाह देती है। गुजरात के दंगों में शमां के पूरे परिवार का सफ़ाया हो जाता है। शमां का एकमात्र बेटा सलीम समर से बेहद नफ़रत करता है। कुछ बाहुबलियों और धार्मिक उन्मादियों द्वारा पुलिस से मिलकर शमां को काफी परेशान भी किया जाता है। उस पर, केस वापस लेने के लिए पुलिस के माध्यम से दबाब बनाया जाता है। बहादुर शमां इनके सामने नहीं झुकती। नतीजतन, शमां की हत्या कर दी जाती है।

जीवन से हताश–निराश समर मुंबई की धारावी बस्ती पहुँच जाता है। यहाँ उसका साथी शंकर बनता है। शंकर के सहयोग और असीम प्रेम के कारण वह लेखन में अपना पूरा समय दे पाता है। हृदयविदारक दुखों और संघर्षों की मार झेलता समर अपने उपन्यास के प्रकाशन हेतु देश के मशहूर पब्लिशिंग हाउस में जाता है जिसका मालिक कोहली है। मुंबई में ही 'गुमराह' उपन्यास के प्रकाशन के साथ समर का भाग्योदय होता है। वह रातोंरात लेखन की दुनिया का बेताज बादशाह बन जाता है। अपने उन्मुक्त विचारों और धार्मिक आडंबरों पर प्रहार करने के कारण वह धार्मिक संगठनों के निशाने पर आ जाता है। मीडिया में उसकी जमकर आलोचना होती है। लेकिन, वह देश में वैचारिक क्रांति लाने में सफल रहता है। अपने व्याख्यानों में समर धर्म, जाति, भेदभाव रहित समाज की बात करता है। सरकार द्वारा उसके उपन्यास 'चाणक्य' पर प्रतिबंध लगा दिया जाता है। ब्लैक में चाणक्य की खूब बिक्री होती है। कोहली, समर के उपन्यासों की बिक्री से अकूत संपति बना लेता है। धार्मिक ठेकेदारों के लगातार उत्पीड़न और जान से मारने की कोशिशों के कारण समर को भारत छोड़कर अमेरिका की शरण लेनी पड़ती है। अमेरिका में समर को काफ़ी इज़्ज़त मिलती है। वहाँ के समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लगातार लेखन के कारण वह दुनियाभर में मशहूर हो जाता है। तलाक शुदा जेनी से उसकी नज़दीकियाँ बढ़ती हैं। ज़ेनी समर के साथ अपने घर बसाने के सपने देखती है। परंतु जेनी का सपना, सपना ही रह जाता है। उसका पति डेविड जेनी को दुबारा हासिल करना चाहता है। साथ ही, डेविड समर को जेनी की ज़िन्दगी ही नहीं, अमेरिका से भी निकाल बाहर करना चाहता है। अमेरिका में रहकर समर अमेरिकी सरकार की पूँजीवादी और विष्व के अन्य दशों के प्रति दमनकारी नीतियों का विरोध लेखन और अपने वक्तव्यों के माध्यम से करता है। अमेरिका उसकी जान का दुष्मन बन जाता है।

वह पाकिस्तानी मूल की लड़की सायरा के साथ पाकिस्तान भाग जाता है। सायरा समर को प्रेम करती है। वह उससे शादी करना चाहती है। पाकिस्तान की सरकार, सेना प्रमुख और आई.एस.आई. चीफ समर का इस्तेमाल अपने हित में करना चाहते हैं। समर डर से अपने सिद्धांत नहीं बदलता। वह इंसानियत की बात करते हुए पाकिस्तान को बेनक़ाब करता है। पाकिस्तान सरकार उसे जेल में डाल देती है। रूसी प्रकाशक डेनिस और साम्यवादी पावेल की सहायता से उसे पाकिस्तान की जेल से निकालकर मास्को लाया जाता है। मास्को में उसकी खूब इज़्ज़त होती है। पावेल और मिखाईल पूर्व की भाँति समर का इस्तेमाल अपने हित में करना चाहते हैं। वे अमेरिका के ख़िलाफ़ समर से सार्वजनिक मंच पर वक्तव्य दिलवाकर अपने पक्ष में माहौल तैयार करना चाहते हैं। समर ऐसा नहीं करता। कभी अमेरिका तो कभी स्वयं रूस की सरकार द्वारा उसकी हत्या करने की नाकाम कोशिशें की जाती हैं। इस बीच, डेनिस की बहन अलीना समर को दिल दे बैठती है। समर को अपना दामाद बनाकर रूसी निकोलाई परिवार गर्व की अनुभूति करता है। रूसी सरकार समर के उन्मुक्त विचारों की आँच नहीं सह पाती है।

अंत में, भारत सरकार समर के महत्त्व को समझकर ढीली पड़ती है और भारत आने का रास्ता उसके लिए खुल जाता है। समर अपनी रूसी पत्नी अलीना के साथ दिल्ली एयरपोर्ट पर उतरता है। उसके हज़ारों प्रशंसक उसकी एक झलक पाने को बेताब रहते हैं। खुशी के उफ़नाते ज्वार के बीच एक धार्मिक उन्मादी व्यक्ति द्वारा समर–अलीना की हत्या एक साथ कर दी जाती है। उपन्यास का दर्दनाक अंत पाठकों के मन पर एक गहरी टीस छोड़ जाता है। समर का चरित्र बांग्लादेश की निर्वासित लेखिका तसलीमा नसरीन और भारतीय मूल के ब्रिटिश लेखक सलमान रुश्दी से मिलता है।

भाव–सौन्दर्य

'फिलॉस्फर' उपन्यास के भाव–सौन्दर्य को निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है–

उदीयमान लेखक का संघर्ष

नवोदित लेखक अथवा लेखक बनने का सपना देखने वाले व्यक्ति को कितने संघर्षों से गुज़रना पड़ता है, इसकी प्रामाणिक तस्वीर समीक्ष्य उपन्यास में देखने को मिलती है। समर का जीवन वास्तव में उदीयमान लेखक का संघर्ष है। समर तो दुरूह संघर्षों के बाद अपने जीवन में सफल हो जाता है। लेकिन, इस संसार में ऐसे लेखकों की संख्या हज़ारों है, जिनकी ज़िन्दगी ही गुमनामी के अँधेरों में बीत जाती है। जीवित रहते अथवा मरने के बाद भी उन्हें पूछने वाला कोई नहीं होता। यह हमारे समय के लेखकों का भयावह सच है। प्रकाशक भी लेखकों का शोषण जमकर करते हैं। इसकी एक बानगी प्रस्तुत है, जिसमें प्रकाशक समर से कहता है– *''मैं यहाँ बिजनेस करने बैठा हूँ, खैरात बाँटने नहीं। मेरा जवाब आज भी वही है जो मैंने फोन पर दस दिन पहले कहा था, पैसा दो और अपनी किताब प्रकाशित करवा लो।''*[3] समर को इस प्रकार की परेशानियों का सामना लगातार करना पड़ता है। जो समर अपनी नई सोच और विचारों के कारण दुनियाभर में

प्रशंसा एवं सम्मान पाता था, वही अपने संघर्ष के दिनों में एक मामूली प्रकाशक की कड़वी बातें सुनने को विवश था। प्रकाशक समर को दूसरे रचनाकारों द्वारा लिखित कहानी–संग्रह पढ़ने की सलाह देता है ताकि उसकी बिक्री होती रहे। वे भी कैसे लेखक, उसकी तरह नौसिखिये, जो समर से भी नए हैं। अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण की भावना नहीं होती और संघर्ष करने की जिजीविशा नहीं होती तो समर भी सदा के लिए गुमनाम बनकर रह जाता। इससे दुखद और बड़ी विडंबना क्या हो सकती है!

बेरोज़गारी की समस्या

आज बेरोज़गारी की समस्या भारत जैसे देश की वास्तविकता है। समर के माध्यम से लेखक हमारे समाज के पढ़े–लिखे बेरोज़गार युवाओं की नियति को दर्शाता है। समर को घर में लगातार अपने पिता और भाई की कटुक्तियों को इसलिए सुनना पड़ता है कि वह बेरोज़गार है। मालती भी, समर की तात्कालिक असफलता और बेरोज़गारी के कारण ही अपनी राह अलग कर लेती है। क्या यह एक समर की कहानी है? नहीं, यह हमारे देश के हर गाँव–शहर की व्यथा कथा है। यह कमोबेश वर्तमान समय की भयावहता है। समर के पिता के शब्द हैं–*''पैंतीस के होने को आए हैं महापुरुश! लेकिन ना नौकरी का पता और ना ही छोकरी का ख़्याल। लाख दफा समझाया कि नौकरी होगी तो लड़की भी अच्छी मिलेगी मगर कान पर जूं नहीं रेंगी। जुनून सवार था जहन पर कि शेक्सपीयर के अब्बा बनकर रहेंगे और देखो हाल, फटीचर से अख़बार में रिपोर्टर बन कर रह गये।''* [4] आज के समय में, हमारे देश के पढ़े–लिखे युवा पाँच–दस हज़ार रुपये की नौकरी पाने के लिए कुछ भी करने को विवश हैं। अपना आत्मसम्मान बेचने के लिए भी। तभी तो, धार्मिक अंधविष्वास के खिलाफ़ रिपोर्टिंग करने के कारण मीनाक्षी एक झटके में समर को निकाल बाहर करती है। थोड़ी बहुत होने वाली उसकी कमाई भी बंद हो जाती है। समर का दोस्त नाशाद अपना आत्मसम्मान गिरवी रखकर वहीं नौकरी करता है।

प्रेम की असफलता

समर असफल प्रेम का प्रतीक पात्र है। मालती से लेकर अलीना तक, उसके जीवन में कई लड़कियाँ आईं लेकिन सब की सब टीस देकर चली जाती हैं। मालती के संग घर बसाने के बड़े सपने समर देखता है। लेकिन उसका सपना वास्तविकता का स्वरूप नहीं ग्रहण कर पाता। असफल प्रेम दुखद याद बनकर रह जाता है। उसका हासिल पीड़ा और वेदना के सिवा कुछ नहीं है। समर की यह नियति बन जाती है कि वह जिसके भी क़रीब आता है या कोई उसके क़रीब आती है, कोई भी प्रेम–कहानी अंजाम तक नहीं पहुँच पाती। चाहे मालती हो चाहे लक्ष्मी या फिर शमां या सायरा। अधूरे प्रेम की टीस उसकी किस्मत बन कर रह जाती है। अंत में, वह रूसी लड़की अलीना से विवाह के बंधन में बंधता है लेकिन आगामी कुछ ही दिनों में उसकी इहलीला समाप्त कर दी जाती है। समर सदैव प्रेम के लिए तरसता रहा। उसका जीवन अधूरी और पीड़ादायक यादों के अतिरिक्त कुछ नहीं है। अपने दुखों का बोझ कम करने के लिए वह अपने आप को शराब में डुबोता है। लेकिन शराब से भी उसे मानसिक शांति नहीं मिलती। इसी तथ्य की अभिव्यक्ति इन पंक्तियों में है–*''मालती की याद अब याद बनकर अतीत का वह धुँधला–सा हिस्सा बनकर रह गई थी, जहाँ उसकी आवाज़ से ही अजनबीपन नहीं झलकता था बल्कि उसका चेहरा भी अब समर को स्पष्ट नहीं बल्कि धुँधला–सा नज़र आता था। जिन आँखों की सुंदरता पर वह दसियों पेज भर देता था, हालत यह थी अब कि बड़ा जोर देने पर भी आँखें उसके जेहन से ओझल ही रहती थीं।''* [5] समर के जीवन के माध्यम से प्रेम की असफलता का चित्रण लेखक द्वारा अत्यंत कुशलता से किया गया है। मालती को पाने के लिए वह भरपूर प्रयास करता है लेकिन वह जीवन के संघर्षों से हार जाता है। एक साल बाद मालती का फ़ोन आता है कि वह शादी कर रही है। इस कारण भी समर अंदर से टूट जाता है। उसके घर से भागने का अप्रत्यक्ष कारण यह भी है।

धार्मिक उन्माद एवं अंधविष्वास का चित्रण

सम्पूर्ण उपन्यास में धार्मिक उन्माद एवं अंधविष्वास के विरुद्ध लेखक की कलम चली है। इसी धार्मिक उन्माद के ख़िलाफ़ बोलने के कारण उसकी जान चली जाती है। वह अपनी जान देकर भी समाज को धार्मिक पाखंडों और कठमुल्लों के षड्यंत्र से आगाह करता है। यही कारण है कि समर अविस्मरणीय चरित्र बन जाता है। जब तक इस संसार में, धार्मिक खेमेबंदी की जगह इंसानियत की बात नहीं होगी, तब तक धर्म के नाम पर आडंबर का प्रदर्शन व्यर्थ है। समर जब अख़बार में काम करता है तो उसे सिर्फ़ इसलिए नौकरी से निकाला जाता है कि समाज की सच्चाई और पाखंड को अखबार में छापता है। इसके लिए उसकी काफ़ी लानत–मलामत भी होती है। समर के शब्द हैं–*''पूरी दुनिया अपने धर्म–मजहब और पीर–पैगंबरों की हड्डियों पर खड़ी है। धर्म बाद में आया, इंसान पहले मगर अजब तमाशा यह कि आज इंसान धर्म की कठपुतली बनकर रह गया। मेरा मतलब, स्वामी दास का रूप अख़्तियार कर चुका है और दास स्वामी। हिंदू धर्म को ही लो, आधुनिकता की आड़ में पुरातनता का बोझ ढो रहा है। .....यही समस्या तुम्हारे इस्लाम को दरपेश है। पुरातनता को आधुनिकता पर लादना चाहता है। दोनों ही अपने मूल से उखड़े, पिछड़े और अभागे। प्रकृति के दास।''* [6] लेखक का स्पष्ट मानना है कि इसी धार्मिक उन्माद के कारण दुनिया रहने लायक नहीं बनती जा रही है। मनुष्य ने अपने आप को इतना विभाजित कर लिया है कि उस विभाजन से निकल पाना संभव नहीं। समर के माध्यम से लेखक उस सषक्त चरित्र की रचना करने में पूर्णतः सफल हुआ है जो धार्मिक उन्मादियों की पोल खोलता है। जातिगत भेदभाव को बेनकाब करता है और इंसानियत की बात करता है। इंसानियत को मूल मानवीय स्वभाव के रूप में परिणत करने की लेखक की हार्दिक इच्छा है।

मीडिया का चरित्र

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है। बेहद अफ़सोस की बात है कि हमारे देश के अधिकांश मीडिया संस्थान अपना दायित्व ठीक से नहीं निभा पा रहे हैं। प्रस्तुत उपन्यास में मीडिया के चरित्र को बेनक़ाब किया गया है। सही और पाखंड के विरुद्ध रिपोर्टिंग के कारण समर की नौकरी चली जाती है। उसे माफ़ी माँगने के लिए कहा जाता है।

ऐसा नहीं करने पर उसे धमकी दी जाती है। मीनाक्षी द्वारा झिड़कने पर समर कहता है–*''मैडम जी,मीडिया लोकतंत्र का चौथा आधार स्तंभ है। यहाँ नैतिकता, राष्ट्रीयता, आदर्शवाद, सच्चाई, ईमानदारी, जनहित, निडरता और देशप्रेम को वरीयता दी जाती है ना कि निजी स्वार्थ या डर को। पत्रकारिता का मतलब नंगी तलवार पर चलना है।''* [7] सफल लेखक बनने के बाद जब समर निर्भीकतापूर्वक और बेबाकी से अपनी बात कहता है तो मीडिया उसकी दुष्मन हो जाती है। इस उपन्यास में यह भी दिखाया गया है कि जो मीडिया किसी व्यक्ति विशेष को रातोंरात सिर पर उठा लेती है, वही उसके थोड़ा भी प्रतिकूल होने पर हाथ धोकर पीछे पड़ जाती है। समर जैसे प्रतिभावान लेखक को यदि दर–ब–दर भटकना पड़ा, यहाँ तक कि उसे अपने देश से भागना पड़ा तो इसके पीछे सिर्फ़ मीडिया का हाथ था। वर्तमान समय की मीडिया अंधविश्वास के प्रचार–प्रसार और कुछ पूँजीवादी घरानों के हित पोशण में लगी हुई है। इससे बड़ी त्रासदी और क्या हो सकती है! धर्म के विरुद्ध बोलने पर मीडिया समर का जमकर चरित्र हनन करती है। इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट माध्यमों में उसके विरुद्ध दुष्प्रचार किया जाता है। समर का एक इंटरव्यू लेने के लिए लालायित रहने वाली मीडिया उस पर व्यक्तिगत आक्षेप लगाकर उसके विरुद्ध माहौल तैयार करती है। उपन्यास के अंत में धार्मिक उन्मादी व्यक्ति द्वारा समर की हत्या कर दी जाती है। इसका अप्रत्यक्ष कारण मीडिया को ठहराया जा सकता है। मीडिया तो उसी दिन समर की हत्या कर देती है जिस दिन वह धार्मिक आडंबर और उन्माद पर खुलकर बोलता है। आज हमारे देश में यही तो हो रहा है।

इंसानियत की महत्ता

'फिलॉस्फर' उपन्यास का मूल संदेश है–इंसानियत की महत्ता स्थापित करना। हर धर्म, जाति, असमानता, भेदभाव, ऊँच–नीच से आगे बढ़कर यह उपन्यास इंसानियत को सबसे बड़ा धर्म बताता है। इंसानियत के अभाव में ही आज मनुष्य एक–दूसरे के खून का प्यासा होता जा रहा है। धर्म के नाम पर होने वाले युद्धों से धरती लाल होती जा रही है। यह कैसा धार्मिक उन्माद है, जिसमें एक धर्म का अनुयायी अपने को दूसरे से श्रेष्ठ मान रहा है। एक–दूसरे के धर्म को नीचा दिखाने की कैसी कुत्सित मानसिकता विकसित हो रही है। समर जहाँ–जहाँ भी जाता है, अपने व्याख्यान में मूलतः इंसानियत की ही बात करता है। समर का कथन है–*''दुनिया ने धर्म–मजहब, जाति, भगवान के नाम पर खुद का विभाजन कर लिया है। उदाहरण देखिए, गोरी,गजनवी,तैमूर लंग और चंगेज खान ने मज़हब और अल्लाह के नाम पर विधर्मियों को काट डाला। और जिन्होंने उनका धर्म अपना लिया, उसको उन्होंने बख्श दिया। ईसाई और यहूदियों ने भी धर्म और अपने गॉड को दुनिया में प्रतिष्ठित करने में इसी मारकाट की नीति का अनुसरण किया। कम हमारे हिंदू लोग भी नहीं हैं।''* [8] वह इंसानियत के विरुद्ध कार्य करनेवाले सभी लोगों और धर्मों को कोसता है। लेखक के अनुसार, वर्तमान समय में इंसानियत की भावना की कमी हमारे समय और समाज की बहुत बड़ी त्रासदी है। इस पर अत्यंत गभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। बड़ी–बड़ी बातें करने वाले लोग और देश इंसानियत के मामले में कितने खोखले होते हैं, इस तथ्य को कई स्थलों पर रेखांकित किया जा सकता है।

धारदार व्यंग्य

विजय सौदाई व्यंग्य करने में माहिर उपन्यासकार हैं। इस उपन्यास के कई स्थलों पर धारदार व्यंग्य सहज द्रष्टव्य है। कहीं किसी व्यक्ति विशेष पर तो कभी जाति, धर्म और समाज की बुराइयों पर। गणेश और नौरंगीलाल ज़ख़्मी ऐसे साहित्यकार का प्रतिनिधित्व करते हैं जो ऊलजलूल लिखते हैं ताकि खूब बिक्री हो। उन्हें समाज से कुछ लेना–देना नहीं होता। गणेश के बारे में व्यंग्य करते हुए लेखक कहता है–*''गणेश ने पढ़ा ज़्यादा था और लिखा कम और लिखा भी वह जो किसी की समझ में मुष्किल से ही आता था। एक लाइन प्रगतिवाद की तरफ इशारा करती तो दूसरी छायावाद को सिर पर धरे इठला–बलखा रही होती। ..... सुमित्रानंदन पंत का जिक्र करते–करते, जयशंकर प्रसाद का तुर्रा भी उसमें फिट कर देते। कुछ लोग तो उन्हें पढ़ा–लिखा मूर्ख कहने से भी गुरेज न करते थे।''* [9] अन्य कई जगहों पर व्यंग्य की तीव्रता सहज रूप से देखी जा सकती है। व्यंग्य के साथ–साथ हास्य का भी समावेश है। विशेषकर जब समर अपने विवाह के लिए लड़की देखने जाता है और उसका चित्रण लेखक करता है। उस समय बरबस पाठक के मुँह से हँसी का फव्वारा छूटता है। हास्य–व्यंग्य के कारण ही उपन्यास में रोचकता बनी रहती है। भाषा का प्रवाह बना रहता है।

साहित्य की दुनिया का खोखलापन

साहित्य को हमारे समाज का दर्पण माना जाता है। लेकिन 21वीं सदी में यह दर्पण धुँधला हो रहा है और इसका खोखलापन बढ़ रहा है। 'फिलॉस्फर' उपन्यास के माध्यम से यह दिखाना भी विजय जी का अभीष्ट रहा है। विशेषकर आरती शर्मा का प्रसंग। आरती शर्मा अपने आप को बहुत बड़ी कवयित्री समझती है। वह खोखले साहित्य की रचना करती है। लेकिन उसकी कविताओं की झूठी प्रशंसा सभी करते हैं। समर सच्ची बात कहता है तो सब उसे झिड़कते हैं। जब मुँह देखकर साहित्य की आलोचना और समीक्षा होगी तो उसका खोखलापन बढ़ता ही जाएगा। आरती शर्मा की रचनाओं की झूठी तारीफ़ करते हुए एक साहित्यकार कहता है–*''मैं यह कविता–संग्रह पढ़ चुका हूँ और मुझे यह कहने में जरा भी संकोच नहीं कि यह किताब साहित्य के क्षेत्र में मील का पत्थर साबित होगी। जीवन का ऐसा कौन–सा पक्ष होगा, जो इस संग्रह से अछूता रह गया। मैं साधुवाद देता हूँ और.....''* [10] आरती की रचनाओं के बारे में झूठी तारीफ़ें की जाती हैं जबकि आरती को स्वयं कविता की समझ नहीं थी। केवल उसे प्रसन्न करने के लिए लोग वाह–वाह करते हैं। इस प्रवृत्ति के कारण ही साहित्य का स्तर गिर रहा है। यदि आज के समय में पाठकों की दूरी साहित्य से बढ़ रही है तो इसके लिए कहीं–न–कहीं लेखक समाज भी दोशी है। सच्चा और गुणवत्ता वाला साहित्य झूठी प्रशंसा का मोहताज नहीं होता। वह तो नदी की धारा की तरह अपनी राह स्वयं बना लेता है। नौरंगीलाल ज़ख़्मी जैसे साहित्यकारों पर व्यंग्य करते हुए साहित्य की दुनिया का खोखलापन दर्शाना भी 'फिलॉस्फर' उपन्यास का उद्देश्य रहा है।

उपसंहार

इस प्रकार, उपर्युक्त विवेचना के आधार पर निःसंकोच कहा जा सकता है कि 'फिलॉस्फर' हिन्दी का एक महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में तत्कालीन समाज निर्माण की बेजोड़ क्षमता है। उपन्यास के पात्र वर्तमान समय का प्रतिनिधित्व करते हैं। साथ ही, समीक्ष्य उपन्यास भाव–सौन्दर्य के दृष्टिकोण से अत्यंत समृद्ध है। उपन्यास नायक समर तमाम रूढ़ियों, विचारों एवं धार्मिक जकड़बंदियों के परे नई सोच, नये विचार और देश–समाज को नई दिशा देने वाली 'फिलॉस्फी' लेकर आता है। इस कारण, उपन्यास का शीर्षक 'फिलॉस्फर' सार्थक कहा जा सकता है। इसमें केवल जीवन–दर्शन ही नहीं है, बल्कि यथास्थान सूक्तिपरक वाक्य इसकी जान हैं। उपन्यास पढ़ने के दौरान पाठक विभिन्न भाव–लहरों पर सवार रहता है। ये लहरें कभी उसे सिखाती हैं तो कभी दुलारती हैं तो कभी रुलाती हैं। उपन्यास में कई ऐसे स्थल हैं जहाँ पाठक की आँखें नम हो जाती हैं। वह रोये बिना नहीं रहता। उपन्यास में पाठकों को बाँधने की क्षमता अद्‌भुत क्षमता है। 391 पृष्ठों का भारी–भरकम उपन्यास पढ़ने में सहज लगता है। भाषा की प्रवाहमयता सर्वत्र देखी जा सकती है।

संदर्भ सूची

1. संपादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी सहित्य कोष, भाग–1, ज्ञानमंडल लिमिटेड प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2005, पृष्ठ–121
2. विजय सौदाई, फिलॉस्फर, सृष्टि प्रकाशन, चंडीगढ़, प्रथम संस्करण–2020, पृष्ठ–381
3. वही, पृष्ठ–22
4. वही, पृष्ठ–11
5. वही, पृष्ठ–10
6. वही, पृष्ठ–19
7. वही, पृष्ठ–30
8. वही, पृष्ठ–327
9. वही, पृष्ठ–59
10. वही, पृष्ठ–62